रेगिस्तान की प्यासी मिट्टी

नवनीत कुमार गुप्ता

मरुस्थलीकरण भूमि अपरदन की ऐसी परिघटना है जिसमें प्राकृतिक क्षमता और पारिस्थितिकी पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। यह आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित कर लोगों की जीविका पर संकट खड़ा करती है। इसलिए वैश्विक स्तर पर मरुस्थलीकरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा सन 1995 से प्रत्येक साल 17 जून को मरुस्थलीकरण के खिलाफ संघर्ष के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है। हर वर्ष यह दिवस किसी विषय विशेष पर केंद्रित होता है।

वर्ष 2013 के मरुस्थलीकरण के खिलाफ संघर्ष के अंतर्राष्ट्रीय दिन का विषय 'जल सुरक्षा और सूखा' है। यह तो हम सभी जानते हैं कि मीठा पानी अमूल्य संसाधन है। पृथ्वी पर उपलब्ध समस्त जल की केवल 2.5 प्रतिशत मात्रा ही मीठा पानी है। और इस मात्रा में से भी केवल एक प्रतिशत ही मानवीय और पारिस्थितिकी आवश्यकताओं के लिए उपयोगी रूप में है। यह देखा गया है कि जब हमें इससे अधिक जल की आवश्यकता होती है तब हमारा ध्यान जल सुरक्षा की ओर जाता है। सूखे क्षेत्रों में जल सुरक्षा का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। इसलिए सूखे क्षेत्रों का बढ़ता दायरा हमें जल सुरक्षा को ओर प्रेरित करता है। प्रत्येक व्यक्ति को सामान्यतः प्रति वर्ष करीब 2000 घन मीटर पानी की आवश्यकता होती है मगर सूखे क्षेत्रों में केवल 1300 घन मीटर पानी ही उपलब्ध हो पाता है।

हालांकि मीठा पानी नवीकरणीय स्रोत है लेकिन उसकी उपलब्धता पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। प्रति वर्ष प्राप्त होने वाले मीठे पानी का करीब 70 प्रतिशत हिस्सा मिट्टी में समा जाता है जिसे पौधों द्वारा उपयोग किया जाता है। इस प्रकार नदियों और भूजल भंडार के हिस्से में केवल 11 प्रतिशत मीठा पानी ही आता है। वैश्विक स्तर पर मीठे पानी का 70 प्रतिशत खेती में खप जाता है। तेज़ी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था में इसका प्रतिशत 90 तक पहुंच जाता है।

लेकिन अकुशल सिंचाई पद्धतियों के कारण मीठे पानी के अत्यधिक उपयोग के कारण भूमि भी दिन-प्रतिदिन बंजर हो रही है। भूमि अपरदन के चलते जल स्तर में गिरावट आने के कारण जल संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। साथ ही तटीय क्षेत्रों में खारे पानी की समस्या बढ़ी है। यही हाल रहा तो वर्ष 2025 तक विश्व की दो तिहाई आबादी को पानी की कमी का सामना करना पड़ेगा।

मरुस्थलीकरण के खिलाफ संघर्ष के अंतर्राष्ट्रीय दिन का लक्ष्य जनमानस को सूखे क्षेत्रों में अकाल की आशंका के प्रति जागरूक बनाकर जल सुरक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है। यह विषय रियो +20 और स्थायी विकास एजेंडे का भी हिस्सा है। इस वर्ष का नारा 'हमारे भविष्य को न सूखने दें' है। मरुस्थलीकरण के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस प्रत्येक व्यक्ति को जल सुरक्षा, मरुस्थलीकरण और अकाल के प्रति सचेत करता है। यह दिन हम सभी को जल और भूमि के संरक्षण और उनके टिकाऊ उपयोग का संदेश देता है।

इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर तीन मुख्य बातों के द्वारा मरुस्थलीकरण को रोकने के प्रयासों को प्रसारित किया जा रहा है। जिनमें से पहली भूमि के अपरदन को रोकना है। इसके अंतर्गत जनमानस को जल सुरक्षा, खाद्यान्न सुरक्षा के साथ ही पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति जागरूक करना शामिल है। दूसरा अहम कदम सूखे के प्रभाव को हर स्तर पर कम करने के लिए कार्य करना है जिसके तहत राहत कार्य के साथ-साथ भावी रणनीति बनाकर उस पर कार्य करना है। आखरी और अहम काम नीति निर्धारकों पर

मरुस्थलीकरण सम्बंधी नीतियों के निर्माण के साथ ही इससे निपटने के लिए कार्ययोजना बनाने का दबाव बनाना है।

भारत के कुल भूभाग का करीब 33 प्रतिशत हिस्सा मरुस्थलीकरण से प्रभावित है। आम तौर पर सूखा, अर्द्ध-सूखा और कम आद्रता वाला क्षेत्र सूखा क्षेत्र कहलाता है जो रेगिस्तानीकरण की ओर बढ़ता जाता है। राजस्थान, गुजरात एवं उड़ीसा सहित अनेक राज्यों में काफी बड़ा क्षेत्र सूखे से प्रभावित है। ऐसे क्षेत्रों में जल संरक्षण अति आवश्यक है। सूखे का मुख्य कारण मिट्टी का अपरदन भी है जो मुख्य रूप से हवा और पानी के द्वारा होता है। सूखे के अन्य कारणों में लगातार एक ही फसल की बुआई करते रहना और रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग, झूम खेती, खनन गतिविधियां, जंगल की आग और अपर्याप्त जल प्रबंधन शामिल हैं।

भूकंप व अन्य प्राकृतिक आपदाओं के विपरीत मरुस्थलीकरण के प्रति हम पहले से सचेत हो सकते हैं। मरुस्थलीकरण का अनुमान लगाने के साथ ही इसे रोकने एवं इससे निपटने की तैयारी की जा सकती है।

ऐसे दिवसों के आयोजनों से हमें प्राकृतिक संसाधनों के समक्ष आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार रहने की प्रेरणा मिलती है। भूमि के अपरदन से हमारे भविष्य को खतरा है लेकिन चिंतित होने भर से काम नहीं चलेगा। हमें इस स्थिति का डटकर मुकाबला करना होगा। अंतर्राष्ट्रीय जल सहयोग वर्ष 2013 एवं संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण दशक (2010-2012) के साथ यह अच्छा अवसर है कि हम सामूहिक और व्यक्तिगत स्तर पर मरुस्थलीकरण को रोकने के लिए प्रयास करें। इसके लिए जल की बूंद-बूंद का संरक्षण करने के साथ मिट्टी के प्रत्येक कण को क्षरण से बचाना चाहिए ताकि इस धरती पर हरियाली का विस्तार हो। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन	:	भोपाल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	(अरविन्द सरदाना) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462017
मुद्रक का नाम	:	(अरविन्द सरदाना) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462017
सम्पादक का नाम	:	सुशील जोशी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	(अरविन्द सरदाना) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017

मैं अरविन्द सरदाना, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

अरविन्द सरदाना,
निदेशक, एकलव्य

1 जुलाई 2013